डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 4 अप्रैल - 2007 . मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - चार | अंक - बारहवाँ | अप्रैल - 2007 | मासिक पत्रिका

श्वास 2

सहजो बाई की बानी
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
मुम्बई : 10 जनवरी 1993

पवित्र यात्रा 13

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
77 आर.बी. राजस्थान : 30 जनवरी 1980

तुम सो रहे हो या जाग रहे हो? 21

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखार
बिन्दु से - एक यादगार दास्तान

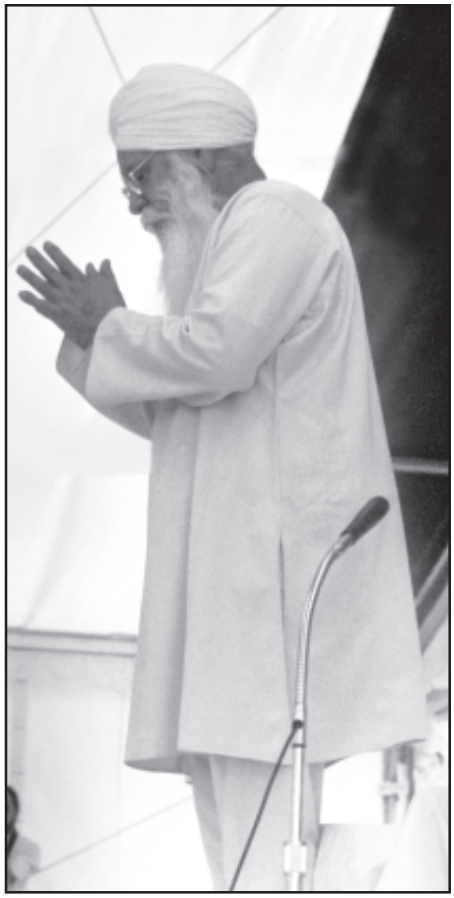

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर; 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
उप सम्पादक : नंदिनी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया
सहयोग : रेणु सचदेव, सुखपाल कौर नौरिया, जसविन्द्र, राजेश कुक्कड़ व तुलसीदास छाबड़ा
सन्त बानी आश्रम : 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website** : www.ajaibbani.org

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

श्वास

10 जनवरी, 1993. मुम्बई

सहजो बाई की बानी

चलो नी सइयों सिरसे नू चलिऐ, तांघा सोहणे यार दिया, चलो नी सईयों.. (2)

1. आप सदा मालिक संग रहिंदे, रात दिने असी दुःखड़े सहिंदे (2)
बेहरे गमां विच हरदम बेहंदे, आर दिया ना पार दिया, चलो नी सइयों...

2. भागे भरियां रुहां तेरिया, नाल तेरे जो हरदम रहियां, (2)
असां मुसीबतां लख लख सहियां, बैठ गिटियां गाल दियां, चलो नी सइयों...

3. पूरी आस उम्मीद न होई, हदों बाहर बैठ मैं रोई,
तैं बिन प्रीतमा जीवंदेयाँ मोई, जान तेरे तों वार दियाँ, चलो नी सइयों...

4. पाके गल्लां गल्लां विच दुःखड़ा, जग सारा पया दिस्से रुखड़ा, (2)
छेती आन विखावी मुखड़ा, दुःखड़ी तेरे दीदार दियां, चलो नी सइयों...

5. तूं मालिक मैं बांदी तेरी, दर्शन पिया देई इक वेरी, (2)
जल्दी करीं ना लावीं देरी, भुखड़ी तेरे दीदार दियां, चलो नी सइयों...

6. कित्थे गयों है सावन प्यारे, बांदी रो रो उम्र गुजारे, (2)
गिननी आं रात बैठ मैं तारे, दिन तक तक राह गुजारदिया, चलो नी सइयों...

7. सौ सौ वारी मैनूं ख्वाबा आइयां, भुल गयो मैंनू मेरे साईयां, (2)
पहले नाल मेरे क्यों लाइयां, गल्ला ऐह आजार दियां, चलो नी सइयों...

8. प्यारे सावन तेरे बिन मोइयाँ, दर्शन बिन मैं पागल होइयां, (2)
पड़दियों बाहर आ सावन रोईयाँ, गल्लां कर हुण प्यार दियां,चलो नी सइयों...

9. मैथों चंगियां जुतियां तेरियां, मैं तती दूर पावां फेरियां, (2)
हाय छेती आवीं गमां ने घेरियां, भुखड़ी सावन दीदार दियां,चलो नी सइयों...

यह शब्द उस समय का है जब मैं आर्मी में ऑपरेटर था। मुझे अभी 'नाम' नहीं मिला था। हमारा एक साहब महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था। मुझे आमतौर पर उसके साथ महाराज सावन सिंह जी के पास जाने का मौका मिलता रहा।

जब महाराज सावन सिंह जी सिरसा में अपनी जमीन आबाद कर रहे थे, वहाँ मकान बनवा रहे थे तो आपने संगत को हुक्म दिया, ''कोई वहाँ न आए, जिन्हें दर्शन करने हैं वे डेरे में ही आएं।''

इस तरह छह महीने बीत गए। जिनका दीन-ईमान गुरु हो, जो **श्वास-श्वास** गुरु को याद करते हों; गुरु के दर्शन करके ही खाना खाते हों, उनके पास लिखकर ही अपने प्यार को जाहिर करने का तरीका था। उस समय मुझे यह मालूम नहीं था कि जिसकी यह लेखनी है आने वाले समय में वही मेरा गुरुदेव - मेरी आत्मा को संभालने वाला बनेगा। हुजूर के दिल में अपने गुरु के बिछोड़े का कितना दर्द था?

ऐसी ही हालत गुरु अर्जुनदेव जी की हुई थी जब उनके पिता गुरु रामदास जी ने उनको बिरादरी की शादी में लाहौर जाने के लिए कहा और साथ ही यह हुक्म दे दिया कि जब तक बुलाया न जाए वापिस न आएं। अमृतसर और लाहौर का फासला तीस मील का था लेकिन प्यारे बेटे के लिए आज्ञा का पालन करना जरूरी होता है। इस शब्द में महाराज कृपाल ने लिखा है: *दर्शन बिन मैं पागल होईयां*।

प्यारेयो ! जिनके दिल में तड़फ होती है उन्हें वह दर्शन जरूर देता है। हमारे सतगुरु महाराज कहा करते थे, ''भूखे को रोटी, प्यासे को पानी कुदरत का असूल है जरूर मिलता है।'' मैं रोज ही आपको सहजो बाई की बानी पर सतसंग सुना रहा हूँ। सहजो बाई कहती हैं:

सहजो दर्शन साध का, दो नैंना कर ले।

प्यारेयो ! अगर हमें दर्शनों की महानता का ज्ञान हो जाए तो रोज-रोज घुटने अकड़ाकर बैठने से हमारा पीछा ही छूट जाए। जब कोई महाराज सावन सिंह जी को माथा टेकता तो आप कहते, ''प्यारेया! नीचे तो जमीन है यह तो आँख का मसला है।''

पश्चिम की बहुत सी बीबीयों ने रसल पर्किन्स से कहा, ''बाबा जी से विनती करे कि सहजो बाई की बानी पर सतसंग कर दें। क्या सन्तमत

में औरत-मर्द एक जैसी तरक्की कर सकते हैं या कोई भिन्न-भेद है?'' यही सवाल सुंदरदास ने महाराज कृपाल से किया था। महाराज कृपाल ने कहा था, ''आत्मा एक है, लिंग भेद दसवें द्वार, पारब्रह्म से नीचे है।''

जब आप अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाकर अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं; वहाँ पहुँचकर आत्मा अपने पूरे यौवन में आ जाती है। यहाँ यह आत्मा पर्दों में गुम है; वहाँ पहुँचकर आत्मा का प्रकाश बारह सूरज जितना हो जाता है। आत्मा को पता चलता है कि मेरा भी कोई परमात्मा है ! मैं भी उसी तत्व की हूँ जिस तत्व का परमात्मा है।

आत्मा न औरत है न मर्द है। न यह अमेरिका की रहने वाली है न हिन्दुस्तान की रहने वाली है। वहाँ पहुँचकर पता चलता है कि पशु, पक्षी और इंसान के अंदर भी वही आत्मा है। सन्तमत में औरत-मर्द को इकट्ठे बिठाकर 'नाम' दिया जाता है और तरक्की करने का अवसर भी सबके लिए एक जैसा ही होता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि औरत, मर्द, बच्चा, बूढ़ा जो भी कमाई करे परमात्मा को पा सकता है; मसला तो प्यार और भरोसे का है। मैंने कल भी आपको सहजो बाई के सतसंग में चेतावनी दी थी कि 'नाम' के बिना सब कुछ नाशवान है। 'नाम' ही सबको सत्ता दे रहा है। परमात्मा ने वह 'अमोलक नाम' हमारे शरीर के अंदर रखा हुआ है।

दुनिया का कोई भी सामान हमारे साथ नहीं जाएगा अगर यह सामान साथ जा सकता होता तो हमारे बुजुर्ग जो इस संसार से चले गए हैं इन्हें साथ ले जाते, हमारे हिस्से में कुछ न आता। इस दुनिया में हम धन-दौलत, महल-माड़ियाँ न तो साथ लेकर आए थे और न ही साथ लेकर जा सकते हैं। यहाँ तक की यह देह भी सगी नहीं, इसे भी यहीं छोड़ जाना है। फरीद साहब कहते हैं:

कित्थे तेन्डे माँ प्यो, जिन्हीं तूं जणयां ओए।
तें पासो ओह चल गए, तूं अजे न पतीनयां ओए॥

इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और हाथ पसारकर चला जाता है। कबीर साहब कहते हैंः

कहे कबीर कुछ गुण बीचार, चले जुआरी दोए हाथ झाड़।

जुआरी सारा दिन यही आशा लगाकर बैठा रहता है कि मैं जुआ जीतकर ही घर जाऊँगा लेकिन उसके पास जो कुछ होता है उसे भी हारकर शाम को खाली हाथ घर चला जाता है। सहजो बाई कह रही हैंः

यह मन्दिर यह नार है, यह धन यह संतान।
तेरो न सहजो कहै, काहे करत गुमान॥

सहजो बाई कहती हैं, ''देख भाई ! तू गुमान करता है कि मेरी स्त्री है। मेरे बच्चे हैं। मेरा इतना बड़ा मन्दिर - मकान है लेकिन यह सब झूठ है; यह यहीं रह जाएगा।'' *अहंकारया सो मारया* । भक्त नामदेव जी कहते हैंः

मेरी मेरी कौरव करदे, दुर्योधन से भाई।
बारह योजन छत्र चढ़ाया, देही गिरज न खाई॥
सरब सोने की लंका होती, रावण से अधिकाई।
कहा पए दर बाँधे हाथी, खिन्न में भई पराई॥

कौरवों-पांडवों ने बड़े बड़े किले बनाए। दुर्योधन, पांडवों को एक सुई की नोक जितनी भी जगह देने के लिए तैयार नहीं था। उस अहंकारी राजा की देह को गिद्ध भी नहीं खा सके। रावण को सोने की लंका का अहंकार था; उसके महलों में सोने की मीनाकारी की हुई थी लेकिन जब श्री रामचन्द्र जी से उसकी हार हुई तो वह जिस लंका का अहंकार करता था वह लंका पल में पराई हो गई। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जो घर छड्ड गवांवणा, सो लग्गा मन माहे।
जित्थे जाए तुध वरतना, तिसकी चिन्ता नाहे॥

जहाँ जाना है उसकी चिन्ता नहीं और जिसे छोड़कर चले जाना है उसकी चिन्ता लगी हुई है।

जन्म जुआ सो हारयो, कियो न लाहा शूल।
डार पात फल सींचित करि, सहजो काटत मूल॥
सहजो गुरु परताप सूं, ऐसी जान पड़ी।
नहीं भरोसा श्वास का, आगे मौत खड़ी॥

आप कहती हैं कि मैं जब गुरु के चरणों में गई तो उन्होंने 'नाम' देकर समझाया, ''बेटी ! यह दुनिया एक जुआ है। इस दुनिया का सामान यहीं रह जाएगा। सब इस दुनिया से हाथ झाड़कर चले गए हैं और तुमने भी चले जाना है। पता नहीं कब मौत आ जाए ! हमें यह भरा बाजार छोड़कर जाना पड़े।''

एक बार मर्दाना ने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''जिंदगी की क्या मुनियाद है और सच-झूठ क्या है?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा कि तुझे सतसंग सुनते हुए इतना समय हो गया है; तू ही बता? मर्दाना ने कहा, ''एक कदम चला हूँ दूसरे कदम का पता नहीं।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''यह तो बहुत लम्बी आस है। **श्वास** ऊपर गया है पता नहीं वापिस नीचे आएगा या नहीं?''

उस समय गुरु नानकदेव जी और मर्दाना उस शहर में गए हुए थे जिस शहर में भाई मूला रहता था। गुरु नानकदेव जी ने सच और झूठ का निर्णय करने के लिए मर्दाना को भाई मूला के पास भेजा। जब मर्दाना ने भाई मूला से सच और झूठ का सौदा देने के लिए कहा तब भाई मूला ने कागज पर लिख दिया, ''मरना सच है, जीना झूठ है।'' मर्दाना ने वह कागज गुरु नानकदेव जी को दिखाया, तब आपने कहा, ''उसने तुझे बहुत अच्छा सौदा दिया है। चेतावनी दी है कि इस दुनिया में नहीं रहना; चले जाना है यही सच है।'' गुरु नानकदेव जी ने भाई मूला को अपना प्रतिनिधि बनाकर उससे 'नामदान' का काम लिया।

भीतर का भीतर खुलै, कै बाहर खुलिजाय।
देह खेह ह्वै जायगी, जै हौ जन्म गँवाय॥

सहजो बाई कहती हैं, ''गुरु के चरणों में बैठकर यह समझ आई कि **श्वास** का क्या भरोसा है ऊपर गया है नीचे आएगा या नहीं, सिर पर मौत खड़ी है।'' आमतौर पर जब डाक्टरों को मौत का कारण समझ नहीं आता तो वह कह देते हैं कि **श्वास** की गतिविधि रूक गई।

गाँव के लोग ऐसे भी कह देते हैं कि फलाना आदमी मर गया। दूसरा कहता है कि **श्वास** ही नहीं आया होगा। प्यारेयो ! अगर **श्वास** की माला चलती रहे तो मौत ही क्यों आए? गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''गिनती के श्वास मिले हुए हैं ये न कम हो सकते हैं न बढ़ सकते हैं।''

श्वासा दीपक के बुझे, होत अंधेरी देह।
सहज शून्य प्राणी बने, जब कैसो हरि नेह॥

सहजो बाई कहती हैं, ''जब तक **श्वास** हैं इनसे फायदा उठाएं। जब दीपक में तेल खत्म हो जाता है तो मन्दिर में अंधेरा हो जाता है। इसी तरह जब इस देह के **श्वास** खत्म हो जाते हैं तो यह देह सूनी हो जाती है। देह का दीपक ही श्वास हैं।''

उस समय घर के लोग याद दिलाते हैं कि परमात्मा को याद कर। बहुत से लोग मौत के समय दीपक जलाते हैं और मरने वाले से कहते हैं, ''इस प्रकाश की तरफ निगाह टिका।'' यह सब कुछ तो हमने जीते जी करना था, ज्योति के दर्शन अंदर करने थे।

आम रिवाज है कि मरते समय हम अपने बच्चों को हुक्म दे जाते हैं कि मेरे मरने के बाद इतना दान कर देना। मैं एक चौधरी का वाक्या बताया करता हूँ : मेरे पिछले गाँव के नज़दीक वह चौधरी हमारे इलाके का एक धनी आदमी था। दयालु कृपाल को दया आई आपने उसके घर जाने का मन बना लिया और लोग तो महाराज जी के दर्शन करते रहे लेकिन वह चौधरी हुक्का ही पीता रहा।

कुछ समझदार लोगों को पता था कि आप विश्व धर्म के अध्यक्ष हैं कभी-कभी लोगों पर उपाधि का भी असर हो जाता है। उन लोगों ने

चौधरी से कहा कि तुम्हारे घर सन्त आए हैं तुम भी उनके दर्शन कर लो। राजस्थान की भाषा में सन्त को मोड्डा कहते हैं। चौधरी ने कहा, ''आप लोग मोड्डे को कुछ न कुछ दे दें, मेरे पास समय नहीं है।'' वह घर आए सन्त के दर्शन भी नहीं कर सका।

सन्त कभी किसी को बद्दुआ नहीं देते लेकिन कुदरत जिंदगी में ऐसे कई खेल दिखा देती है। कुछ दिनों बाद चौधरी का होनहार लड़का एक्सीडेंट में गुजर गया। कुछ समय पहले उसने बहुत पैसा खर्च करके लड़की की शादी की थी, उसका दामाद भी उसी एक्सीडेंट में गुजर गया। वह चौधरी मेरे पास आया, मन अंदर से गवाही दे देता है कि मुझसे यह गलती हुई है। मैंने कहा, ''अब क्या हो सकता है।'' फिर उसने मुझसे कहा, ''मैंने लड़कों से कह दिया है कि मेरे मरने के बाद स्कूल पर पचास हजार रूपये खर्च कर देना।'' मैंने उससे कहा, ''तू अपने जीते जी यह खर्च कर दे।'' काल जीते जी ऐसा करने नहीं देता। कुछ दिनों बाद उसने बीकानेर में चोला छोड़ दिया। सन्त कहते हैं, ''जो करना है अभी करो, आगे का क्या भरोसा।''

सहजो फिरि पछितायगो, श्वास निकस जब जाय॥
जब लगि रहै शरीर में, राम सुमिरि गुणगाय॥

आप कहती हैं, ''जब तक शरीर में **श्वास** हैं तब तक भजन करें; बाद में पछताने से क्या होगा?'' स्वामी जी महाराज कहते हैंः

मश्क समान जान ऐह देही, बहती आठों धाम।

जैसे मश्क में भरा हुआ पानी कितनी देर रह सकता है? जैसे ही उसका मुँह खुलेगा वह खाली हो जाएगी। स्वामी जी इस देह को एक मश्क कहकर बयान करते हैं कि मश्क का मुँह तो एक तरफ खुलता है लेकिन हमारा **श्वास** ऊपर जाता है, नीचे आता है यह दोनों तरफ से खाली हो रहा है। कबीर साहब कहते हैः

पापी जिसका लोभ करत है, आज काल उठ जावेगा।
धर्मराज जब पूछत बपुरे, क्या जवाब सुणांवेगा॥

श्वास खजानो जात हैं, ताकी सूधी नाहिं।
सहजो खरचौ का रहो, करि हिसाब घर माहिं॥
सहजो नौबति श्वास की, बाजति है दिन रैन।
मूरख सोवत हैं, महाचेतन को नहिं चैन॥
हरिणाकुश से ह्वे मिटे, दुर्योधन शिशुपाल।
कुंभकरण रावण गये, सहजो खाया काल॥

हम सोचते हैं कि सन्तों ने हमें डराने के लिए नर्कों-स्वर्गों की कहानियाँ लिखी हैं, कोई धर्मराज नहीं, कोई चित्रगुप्त नहीं। यह हमारी मनोकल्पना है कि खाओ, पिओ, मौज उड़ाओ कौन है पूछने वाला?

प्यारेयो ! काल चौबिस घंटे ताक में रहता है। जब हमने कोई अच्छा कार्य करना होता है तो हम पंडित, मौलवी, भाई और समाज के ठेकेदारों से पूछते हैं कि कौन सा दिन, कौन सा मुर्हूत अच्छा है? जब पाप करना होता है तो बेटा बाप से, बेटी माता से सलाह नहीं करती जिसे मौका मिलता है फायदा उठाने की कोशिश करता है। यह नहीं सोचता कि जो फन्दा मैं गले में डाल रहा हूँ कोई मुझे देख भी रहा है?

हम देह में बैठकर पापों-पुण्यों का बदला चुका रहे हैं। अच्छे घर में पैदा होना, अच्छी तंदरूस्ती, अच्छी बुद्धि और हर प्रकार की सहूलियतें यह पुण्यों का ईनाम है। गरीब घर में पैदा होना, बीमारी का पीछा न छोड़ना, बुद्धि का अच्छा न होना यह पापों की सजा है अगर इससे भी ज्यादा पाप हैं तो नर्कों में जाते हैं। आखिर में धर्मराज सारा चिट्ठा खोलकर हमारे आगे रख देता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक आखे रे मना, सुणया सिख सही।
लेखा रब मंगेसिया, ते बैठा कड्ड बही॥
अजराईल फरिश्ता, होसी आई पई।
आवन जाण न सुझी, भीड़ी गली फही।
कूड़ न खुट्टे नानका, ते ओढ़क सच रही॥

धर्मराज को सच्चा न्याय करने का हुक्म है; उसका किसी के साथ वैर-विरोध नहीं। मुसलमानों की पवित्र किताब में उस तंग गली का जिक्र आता है जहाँ से जीव अपने सिर पर पापों का बोझ लेकर गुजरता है। यमदूत डंडे मारते हैं गिरता है तो नीचे पस और रक्त की नदी बह रही होती है। इसका जिक्र गरुड़ पुराण में भी है। गुरु नानक कहते हैं:

मरन न महूर्त पूछिए, पूछी तिथि न वार।
इक न लद्दे इक लद्द चले, इक न लद्दे भार॥

हम चाहे मौत को भूल जाएं लेकिन मौत हमें नहीं भूलती। मौत मुर्हूत नहीं पूछती। पहले भी मिट्टी थे फिर मिट्टी बन जाते हैं। चाहे लाखों लोग आपको सलाम करते हों ! आपकी जी हजूरी करते हों अगर आपकी दरगाह में इज्ज़त नहीं तो यह सब किस लेखे में है?

सहजो बाई ने मिसालें देकर समझाया कि कुंभकरण, रावण जैसे योद्धा जब तक युद्ध न कर लें तब तक उनके बाहुबल फड़कते रहते थे। शिशुपाल और दुर्योधन के भाइयों को भी मौत ने निगल लिया।

निश्चय मरना सहजिया, जीवन की नहिं आस।
कै टूटी सी झोपड़ी, कै मंदिर में वास॥

सहजो बाई कहती हैं, ''चाहे आप सोने के मन्दिर में बैठे हों चाहे झोपड़ी में बैठे हों मरना अवश्य है।'' वह झोपड़ी अच्छी है जहाँ बैठकर परमात्मा को याद करते हैं। वह बड़े-बड़े महल-मन्दिर किस काम के जहाँ बैठकर परमात्मा को भूल जाते हैं। ये महल-मन्दिर जो परमात्मा ने हमें रहने के लिए दिए हैं यह हमारे पिछले जन्म के पुण्यों का ईनाम है। हमें इनमें बैठकर उस देने वाले परमात्मा को भी याद रखना चाहिए; क्योंकि एक दिन उसके आगे जाकर पेश होना है।

कै गरीब सिर टोकरी, कै सिर छत्तर होय।
जन्म मरण में एक से, सहजो भांति न दोय॥

जन्म के समय राजा और गरीब दोनों माँस के लोथेड़े की तरह होते हैं और मौत के समय भी दोनों को कंधों पर उठाकर ले जाते हैं।

जब हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने शरीर छोड़ा उस समय रेडियो पर बड़े ही विरागमय शब्द सुनाए गएः

मन लाग्यो रे यार फकीरी में, हाथ में कुंडा बगल में सोटा चारो दिशा जंगीरी में।

अगर हम जीते जी ऐसे शब्द नहीं गाते तो हमारे जाने के बाद और लोग गाने लग जाते हैं।

मरना है रहना नहीं, जाना वाही ठौर।
सहजो कै कंगाल हो, काहो द्रव्य करोर॥
आपन हूं थिर होय जो, करै और को सोग।
सहजो साथी नावके, सभी बटाऊ लोग॥
बैठ बैठ बहुतक गये, जग तरुवर की छांहि।
सहज बटाऊ बाटके, मिलि मिलि बिछुरत जाहि॥

सहजो बाई बड़ी अच्छी मिसाल देकर समझाती हैं, ''जब हमारा कोई साथी माता, पिता, पति, पत्नी या बच्चा हमारा साथ छोड़ जाता है तो हम रोते चिल्लाते हैं। अगर हमें यह पता हो कि हमारे साथ भी यही होना है तो हम थिर हों और दूसरों का सोग मनाएं। जैसे नाव में अनेकों ही मुसाफिर आते-जाते हैं इसी तरह घरों में अनेकों ही बहन, भाई, माता, पिता बनकर आते और चले जाते हैं।'' नानक जी कहते हैंः

तुम रोवो उनको, तुमको कौन रोई, धंधा पीटो भाईयो, तुम कूड़ कमाओ।

सब अपने-अपने मतलब के लिए रोते हैं। माता कहती है, ''बेटा बड़ा हो जाता तो मुझे कुछ कमाकर खिलाता।'' जिसके **श्वास** रूक गए, देह सूनी हो गई वह तो सुनता नहीं लेकिन हम दूसरों को सुनाते हैं। जिस तरह वृक्ष के नीचे अनेकों ही मुसाफिर बैठकर चले जाते हैं, वह रहने की जगह नहीं होती; इसी तरह हम अनेकों के माता, पिता, भाई, बहन बनकर चले जाते हैं नहीं मालूम कि आगे और कितने बनाने हैं?

यह रस्ता बहता रहै, थमें नहीं क्षण एक।
बहु आवें बहु जात हैं, सहजो आंखिन देख॥

यह बेड़ी चलती रहती है। एक आता है एक जाता है। यह रास्ता न बंद हुआ है, न होगा। आप अपना ख्याल अपनी मंजिल की तरफ रखें।

मैं बताया करता हूँ, ''सतसंगी को हमेशा तीन बातें ध्यान में रखनी चाहिए कि मैं कहाँ से आया हूँ? मुझे क्या करना है? मुझे आगे कहाँ जाना है? जो अंदर जाते हैं उनके लिए यह पता लगाना मुश्किल नहीं। वे दूसरे के बारे में भी पता लगा सकते हैं कि वह किस योनि में गया है, उसकी संभाल हुई है या नहीं?''

बाबा बिशनदास जी का एक मुसलमान फकीर फत्ती के साथ बहुत प्यार था। मैं जब उन दोनों को महाराज सावन के दर्शनों के लिए लेकर गया तो फत्ती ने महाराज सावन से कहा, ''आपका एक जन्म फरीदकोट के राजा के यहाँ भी हुआ है।'' फरीदकोट स्टेट पंजाब में है। अब तो रियासतें खत्म हो गई हैं। महाराज सावन ने हँसकर कहा, ''हाँ भई ! क्या अब कोई मुझे उन महलों में घुसने देगा?''

सहजो बाई कहती हैं कि हम इस संसार में अनेकों बार आए और गए। अच्छा वही है जो इस जंजाल में रहते हुए, लेन-देन का भुगतान करते हुए 'शब्द-नाम' की कमाई करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु पूरा भेटिए, पूरी होवे जुगत।
हसेंदया खेलेंदया पहनेंदया, विच्चे होवे मुक्त॥

गुरु हमें पूरी युक्ति और रास्ते की जानकारी कराता है। उस रास्ते का वाकिफकार ही हमें अंधकार से निकाल सकता है।

जग देखत तुम जाउगे, तुम देखत जगजाय।
सहजो योंही रीति है, मति करि सोच उपाय॥
मुये सो काया जालई, बहुरि न मिलिहै आय।
रोयेते कह होत है, सहजो झुरै बलाय॥
झुरि झुरि कै पिंजर भये, रोय गँवाये नैन।
मर गये सो ना मिलै, सहजो सुनैं न वैन॥

शेष पृष्ठ 20 पर...

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

पवित्र यात्रा

30 जनवरी 1980 *77 आर.बी. राजस्थान*

एक प्रेमी - मैं यह जानने को उत्सुक हूँ कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए; अभ्यास में कितना समय लगाना चाहिए? मेरे कुछ दोस्त और सतसंगी जोकि घर पर ही रहते हैं इस बारे में आपकी राय जानना चाहते हैं अगर मैं आपकी बताई हुई बातें उन्हें बता दूँ तो क्या इसमें मेरा कुछ नुकसान होगा?

बाबा जी - आप अपने देश और घर में जितना भी समय भजन-अभ्यास में लगाएंगे वह आपके लिए रूहानियत में फायदेमंद होगा। अभ्यास के साथ-साथ यह जरूरी है कि आप अपने शरीर मन और विचारों को पवित्र रखें।

जहाँ तक दूसरे लोगों को अपने अनुभव बताने के बारे में प्रश्न है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे आपके अनुभव सुनना चाहते हैं या नहीं? यह किसी पर लादने वाली चीज़ नहीं।

आप इस यात्रा को साधारण यात्रा न समझें, अगर इस यात्रा के महत्व को समझें तो आपको लगेगा कि आप पर मालिक की बहुत दया है। उस मालिक ने आपको इस **पवित्र यात्रा** का मौका दिया। जब आप अपने देश वापिस लौटेंगे अगर आपके दोस्तों को कुछ जानने की इच्छा होगी तो वे आपसे इस **पवित्र यात्रा** के बारे में अवश्य पूछेंगे।

अगर आपने यहाँ रहकर भजन-अभ्यास करके कुछ कमाया है तभी आप उन्हें इस **पवित्र यात्रा** के बारे में बताकर कुछ नहीं गंवाएंगे लेकिन शर्त यह है कि उनके दिल में कुछ लेने की इच्छा हो !

एक प्रेमी - सन्त जी ! कुछ दिनों से शाम के समय आप हमसे बातचीत नहीं कर रहे हैं। इस समय में केवल शब्द ही गाए जाते हैं क्या हम शब्द गाने की बजाय भजन-अभ्यास कर सकते हैं?

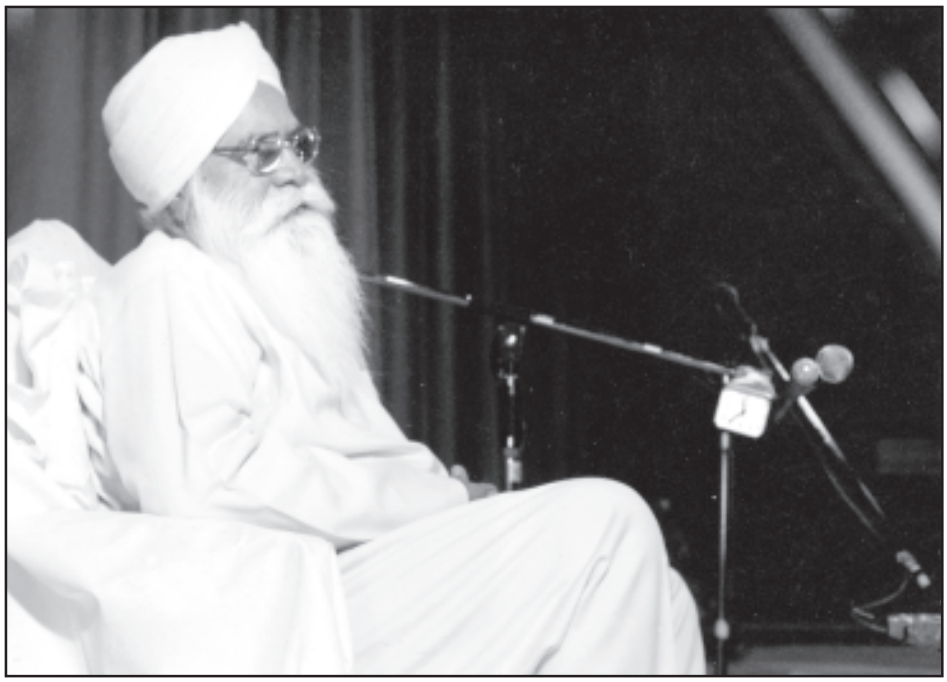

बाबा जी - हर आदमी अलग-अलग तरीका चाहता है। मैं पिछले ग्रुप में शाम को सतसंग ही देता रहा, शब्द नहीं गाए गए। कुछ प्रेमियों ने शिकायत की कि हम शब्द गाना चाहते हैं। जब प्रेमी शब्द गाते हैं तो उन पर 'नाम' की खुमारी चढ़ जाती है और वे उस रस में डूब जाते हैं।

आपको पता होना चाहिए कि रात को आठ से लेकर नौ बजे तक का वह समय है जब महाराज कृपाल देह छोड़कर इस संसार से चले गए थे, उस समय मैंने गुफा में रहने का फैसला किया था। तब राजस्थान के प्रेमियों की प्रार्थना पर ही मैं इस एक घंटे के लिए गुफा से बाहर आता था। यहाँ के प्रेमी इस एक घंटे में शब्द गाते और उनसे बातचीत होती थी। यह समय सिर्फ आप लोगों के लिए नहीं बल्कि यहाँ आने वाले सभी लोगों के लिए है।

आपने देखा होगा कि बहुत से प्रेमी यहाँ आनंद प्राप्ति के लिए आते हैं इसलिए इस एक घंटे के समय की महानता को समझें ! आप भी शब्दों का आनंद लें और उनसे लाभ उठाएं।

एक प्रेमी - जब कोई शिष्य आपके सामने शब्द गाता है तो क्या आप उस समय उस शिष्य की तरफ ज्यादा ध्यान देते हैं या शिष्य आपकी ज्यादा दया प्राप्त करता है?

बाबा जी - आप जानते हैं कि जब कोई विद्यार्थी कक्षा में कुछ पढ़कर सुना रहा होता है तो उस समय अध्यापक का सारा ध्यान उस विद्यार्थी की तरफ हो जाता है। इसी तरह आप जिस मालिक की याद में गा रहे हैं उसे भी आपको कुछ देना पड़ता है क्योंकि आप उस मालिक का काम कर रहे हैं। उस समय मालिक आपकी आत्मा को ऊपर खींचता है जिसका भले ही आप अनुभव न कर पाएं लेकिन उस समय उसे आपके ऊपर दया बरतानी ही पड़ती है। मेरे एक शब्द में आता है:

तेरियां ऐं आत्मा, तूँ सुण अरजोई वे, सुण अरजोई वे।

आप मालिक की याद में शब्द गाकर यमों से मुक्त हो सकते हैं। शब्द गाते समय हमारी जुबान भी पवित्र हो जाती है। गुरु नानकदेव जी मालिक की याद में शब्द गाने वालों को पवित्र ग्रुप कहकर बयान करते हैं। ऐसा न समझें कि शब्द गाना एक रीति-रिवाज है। जब प्रेमी इकट्ठे होकर मालिक की याद में शब्द गाते हैं तो वे ऐसा महसूस करते हैं जैसे वे अमृत पी रहे हैं; उनके अंदर का जहर निकल जाता है और उनमें शान्ति आ जाती है।

एक प्रेमी - जब सन्त खुद शब्द गाकर शिष्यों को सुनाते हैं तो इसका क्या महत्व है? क्या आप भी हमें शब्द गाकर सुनाना चाहते हैं?

बाबा जी - हँसते हुए, मैंने कई बार शब्द गाए हैं। मैंने हुजूर कृपाल के सामने कई बार शब्द गाए हैं। हुजूर कृपाल शब्दों को बहुत ध्यान से सुना करते थे, कई बार खुश होकर मेरी तरफ देखकर इशारा करते हुए कहते, ''हाँ! यह ठीक है।''

वह बहुत ही सुहावना समय था जब मैं हुजूर के सामने बैठकर शब्द गाया करता था। हुजूर शब्द के एक-एक लफ़्ज को ध्यान से सुनते

और खुश होते। मुझे उस समय जो आनंद मिलता मैं उसे बयान नहीं कर सकता। गुरु की मौजूदगी में जो आनंद होता है हमें उस आनंद को लेने के काबिल होना चाहिए।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''शेरनी का दूध रखने के लिए सोने का बर्तन होना चाहिए, नहीं तो दूध फट जाएगा।'' रोजाना के भजन-अभ्यास से हमारी आत्मा पवित्र होती है और हम परमात्मा के नज़दीक हो जाते हैं। अफसोस से कहना पड़ता है हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार में फँसकर अपनी आत्मा को अपवित्र कर रहे हैं।

आप जानते हैं कि सफेद कपड़े को रंगना आसान है लेकिन गंदे कपड़े को रंगना बहुत मुश्किल है क्योंकि गंदे कपड़े को साफ करने में बहुत समय लगता है फिर भी उस पर रंग नहीं चढ़ता।

मेरा जाति तजुर्बा है, मैंने कई बार बताया है कि प्रेमी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे सूखे बारूद को आग की तरफ कर दें; सूखा बारूद आग के पास पहुँचते ही भभक उठता है लेकिन हम लोग गीले बारूद हैं। गीले बारूद को सूखने में समय लगता है।

इसी तरह हमारी आत्मा पर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के कई पर्दे चढ़े हुए हैं। भजन-सिमरन करने से ही ये पर्दे उतरेंगे, हमारी आत्मा शुद्ध होगी और हमें 'शब्द-नाम' का अनुभव होने लगेगा।

आप अपनी जिंदगी को पवित्र बनाएं फिर देखें ! 'नाम' का रंग कैसे चढ़ता है? हम लोग 'नाम' तो ले लेते हैं लेकिन परहेज नहीं करते इसलिए हमारी तरक्की रुक जाती है।

प्यारेयो ! आपने अपनी जिंदगी विषय-विकारों में गँवा ली है फिर भी आपको तसल्ली नहीं हुई अगर आप सांसारिक भोग-विलासों में ही लगे रहेंगे तो भोग आपको ही भोग लेंगे। आग में लकड़ियाँ डालने से आग और तेज भड़कती है अगर हम मन की बात मानेंगे तो विषय-विकारों का चक्कर बढ़ता ही जाएगा।

एक प्रेमी- जिस तरह कपड़े को साफ करके उसमें से सफेदी निकाली जाती है उसी तरह जब हम मन को साफ करना चाहते हैं तो पाप सामने आ जाता है। क्या यही पाप गुरु और शिष्य के बीच में दीवार बनकर खड़ा हो जाता है?

बाबा जी - आप जब भी कोई काम करते हैं पहले सोचें कि यह काम अच्छा है या बुरा है? मन में पाप की वजह से आप लोग काम करने से पहले नहीं सोचते ! गलती कर लेते हैं फिर सोचते हैं कि मुझसे गलती हो गई है। परमात्मा और आप के बीच में यही रुकावट है। कुएँ में कूदने से पहले सोचना था कि आपको चोट लग सकती है ! आपकी टाँग टूट सकती है ! आप मर भी सकते हैं ! बाद में पछताने का कोई फायदा नहीं। पहले सोचो फिर करो।

मन की आदत है कि यह हमें गलत काम करने की सलाह देता है। हमसे गलत काम करवाकर कहता है, ''ओह ! तूने यह क्या किया?''

कबीर साहब कहते हैं, ''मन हमें जंगल में जाकर भजन-अभ्यास करने की सलाह देता है। जब हम जंगल में पहुँच जाते हैं तो यह मन हमें घर वापिस जाने की सलाह देता है, कहता है कि भजन-अभ्यास घर पर रहकर भी किया जा सकता है। यह मन बहुत से बहाने बनाकर हमें जंगल से घर ले आता है।''

जब हम घर वापिस आ जाते हैं तो हमारा मेल-मिलाप दुनियावी लोगों से बढ़ जाता है। वे लोग हमसे कहते हैं कि तुम शादी कर लो। जब हम शादी कर लेते हैं, गृहस्थ में फँस जाते हैं; भजन-अभ्यास छोड़ देते हैं। यह मन हमें भटकाता है पहले कहता है कि तू भक्ति कर फिर कहता है गृहस्थ भोग। मन की बातों में फँसकर ही यह जीव चौरासी लाख योनियों में जन्मता और मरता है।

मेरा एक चचेरा भाई है। जब हम छोटे थे तो हमने कसम ली थी कि हम कभी शादी नहीं करेंगे, परमात्मा की भक्ति करेंगे। कुछ समय अभ्यास करने के बाद वह अपने घर चला गया। थोड़े समय बाद उसकी

शादी तय हो गई। उस समय मैं आर्मी में था। मेरे चाचा ने मुझे इस डर से शादी में नहीं बुलवाया कि कहीं मैं उसे पुरानी कसमें याद न दिला दूँ और वह शादी न करवाए।

जैसे ही मुझे पता लगा कि मेरे चचेरे भाई की शादी हो रही है। मैं बिना बुलाए ही वहाँ पहुँच गया। उस समय शादी की रसमें चल रही थी। मैं वहाँ चुपचाप बैठ गया। मेरे चाचा ने मेरा स्वागत नहीं किया, बल्कि नाराज होकर कहा, ''तुम यहाँ क्यों आए हो वापिस चले जाओ?'' कुछ रीति-रिवाजों के बाद जब मेरा चचेरा भाई घोड़ी पर बैठा तो मैंने मौका देखकर उससे पूछा, ''तुम्हारी उन कसमों का क्या हुआ?''

इतना कहकर मैं वहाँ से चुपचाप चल पड़ा ताकि कोई समस्या खड़ी न हो जाए। वह लड़का एक अच्छी आत्मा थी, उसने महसूस किया कि मैं क्या कर रहा हूँ? वह घोड़ी से उतरकर एक तरफ चल पड़ा। आखिर हम दोनों रेलवे स्टेशन पर मिले। मैं एक स्टेशन की और वह किसी और स्टेशन की टिकट खरीद रहा था।

कुछ देर बाद परिवार के लोग दूल्हे को ढूँढने लगे। बारात जाने के लिए तैयार थी लेकिन दूल्हा नदारद था। मुझे वहाँ न पाकर चाचा को चिन्ता हो गई कि कहीं मैं उसे भगाकर न ले गया हूँ। कुछ लोगों को इधर-उधर और रेलवे स्टेशन की तरफ भेजा गया।

जब हम पकड़े गए तो खूब मारपीट हुई। मैं बहुत पतला था और ताकतवर लोग मेरे पीछे भाग रहे थे। रेलवे स्टेशन पर खड़े लोग समझ नहीं सके कि क्या हो रहा है? मैंने बताया, ''मैं फौज में अपनी ड्यूटी पर जा रहा हूँ ये लोग मुझे परेशान कर रहे हैं।'' आखिरकार वे लोग हमें पकड़कर चाचा के घर ले आए और उस लड़के की शादी करवा दी।

उसकी शादी से पहले की बात है जब हम परमात्मा की तलाश में इकट्ठे अभ्यास किया करते थे। गाँव के लोग उस लड़के की इज्ज़त करते थे। एक दिन उस लड़के ने गाँव में जाकर यह बात फैला दी, ''अब यह संसार नष्ट होने वाला है।'' गाँव के लोगों ने पूछा, ''इससे

बचने का कोई तरीका है?'' उसके पास इस बात का कोई उत्तर नहीं था क्योंकि उसे परमात्मा का ज्ञान नहीं था।

तब मैं वहाँ गया और मैंने कहा, ''यह संसार कभी भी पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होता लेकिन इस लड़के की दुनिया नष्ट होने वाली है क्योंकि अब इसके मन ने इसे अपने गाँव वापिस जाकर अपने परिवार के साथ रहने की सलाह दी है। एक दिन इसकी शादी हो जाएगी और यह गृहस्थ में फँस जाएगा। उस समय उसने मेरी बात का विश्वास नहीं किया इसलिए मैं वहाँ से चल पड़ा।''

उसकी शादी हुई और उसके घर नौं बेटियों ने जन्म लिया। भारत में लड़कियाँ एक बड़ी समस्या हैं। माता-पिता को लड़की के लिए अच्छा लड़का ढूँढना और लड़की की शादी पर बहुत खर्च करना पड़ता है। अब वह बूढ़ा और अंधा हो गया है, उसे आठ बेटियों को पालना पड़ता है (जिसमें से एक बेटी शादी के बाद मर चुकी है)।

कुछ महीने पहले दिल्ली जाते हुए वह मुझे रायसिंह नगर में मिला। वह देख नहीं सकता था लेकिन उसने मुझे मेरी आवाज से पहचान लिया। मैंने उससे पूछा, ''तुम्हारा क्या हाल है?'' उसने कहा, ''मैं शादी करके पछता रहा हूँ।'' मैंने कहा, ''अब पछताने से क्या फायदा? मैंने तो तुम्हें कसमों की भी याद दिलाई थी, तुम नहीं माने।''

पहले आपका मन आपको सलाह देता है कि आप सन्त बनें, गुरु बनें; परमात्मा की भक्ति करने वाले बनें। फिर यही मन कुछ समय आपसे परमात्मा की भक्ति भी करवाता है। फिर यही मन अचानक ऐसी चाल चलता है कि फिर आपको दुनियावी जिंदगी जीने की सलाह देता है और आप धीरे-धीरे सांसारिक कामों में फँस जाते हैं। हमें इस मन से सावधान रहने की जरूरत है।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैं सोचता था कि मेरा मन मरकर भूत बन चुका है लेकिन यह मन एक ऐसा भूत है जो मरने के बाद भी मेरा पीछा कर रहा है।''

U U U

सहजो बाई प्यार से समझाती हैं, ''जब घर में किसी प्यारे की मौत हो जाती है तो हम रो-रोकर आँखें खराब कर लेते हैं, खाना नहीं खाते शरीर को पिंजर बना लेते हैं लेकिन मरने वाला हमारी बात नहीं सुन सकता, भाणां मानने में ही अच्छाई है।''

धर्मराज हर जन्म के बाद परख करता है अगर हम खोटे हैं तो नर्कों में धकेल देता है। यहाँ तो हम पाप करके छुपा लेते हैं लेकिन वह **श्वास-श्वास** का हिसाब माँगता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

चित्रगुप्त जब पूछत लेखा, तब क्या जवाब सुनाएगा।

सहजो बाई ने हमें बड़ी अच्छी अच्छी मिसालें देकर समझा दिया कि यह दुनिया नदी नाम संजोगी मेला है। समझदार आदमी **श्वासों** के रहते इनका पूरा फायदा उठाते हैं; 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन सतगुरु वाट न पावे।

सतगुरु के बिना हम मंजिल तक नहीं पहुँच सकते, यह रास्ता तय नहीं कर सकते लेकिन सतगुरु को पाना हमारे अपने बस में नहीं। अगर परमात्मा मेहर करे तो ही हम सतगुरु के चरणों में पहुँच सकते हैं, 'नामदान' प्राप्त कर सकते हैं। सतगुरु मेहर करता है हमारी सुरत को अंदर शब्द के साथ जोड़ देता है।

हमारे ख्याल जितने पवित्र होंगे उतना ही हमारा मन पवित्र होगा। पवित्र मन का असर आत्मा पर पड़ता है। अगर लोहा साफ होगा तो चुम्बक उसे खींच लेगा लेकिन हम विषय-विकारों में लिपटे हुए हैं।

परमात्मा ने हमारे ऊपर दया करके हमें अमोलक हीरा जन्म दिया है। हमारे गुरुओं ने दया करके हमें 'अमोलक नाम' दिया है। हमें चाहिए अपने जीवन को पवित्र बनाएं और ईमानदारी से उनके दिए हुए 'नाम' की कमाई करें।

U U U

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखार बिन्दु से – एक यादगार दास्तान

तुम सो रहे हो या जाग रहे हो ?

अब मोहे नैनन स्यों, गुरु दिया, (2)

1. *दर दर फिरती, पूछे ना कोई, ना जीवत ना, समझु मोई, (2)*
   मोहे गुरु ने जीवत किया, (2)
   अब.....

2. *मैं अनजान कछु ना जानू, गुरु की महिमां ना पहिचानू, (2)*
   मोहे माटि सौं कंचन किया, (2)
   अब.....

3. *नैनन में ना सुझत मोहे, रात अंधेरी रस्ता नाहें, (2)*
   मोहे गुरु ने रोशन किया, (2)
   अब.....

4. *मोरे गृह में सतगुरु आए, सुते हुए भाग जगाए, (2)*
   अजायब कृपाल सतगुरु लीया,
   अब.....

मैंने पहले भी जिक्र किया है कि मेरे पहले गुरु बाबा बिशनदास जी बहुत सख्त थे। मैं जब भी उनके पास जाता, उन्हें कोई सेवा देता तो वह मेरे साथ बहुत सख्त व्यवहार करते, मेरी पिटाई भी करते। उन्होंने मुझे कभी भी अपने आश्रम से एक कप चाय का भी नहीं पीने दिया।

बाबा बिशनदास ने मेरी जिंदगी बनाई अगर वह मेरे साथ इतने सख्त न होते तो मैं अनुशासन नहीं रख पाता। मैं जब अपने प्यारे गुरु कृपाल से मिला, वह बहुत दयालु और प्यार से भरे हुए थे। आपने मुझे वह प्यार दिया जिसकी मुझे तलाश थी।

हुजूर कृपाल ने एक बार मुझे अपने साथ कमरे में सुलाया। मैं आपके पास लेटा हुआ था लेकिन सो नहीं रहा था। मैं आपकी आँखों में देख रहा था, आप मेरी तरफ देख रहे थे। उस समय रात के 2 बजे थे। आपने अचानक मुझसे पूछा, **''तुम सो रहे हो या जाग रहे हो?''** मैंने कहा, ''मैं जाग नहीं रहा, मैं जन्मों-जन्मों से सो रहा हूँ।'' आपने मुझे अपने पास बुलाकर कहा, ''यहाँ आओ।''

वहाँ एक कुर्सी रखी थी आपने मुझे उस कुर्सी पर बैठने के लिए कहा और खुद पलंग पर बैठ गए। आपने बहुत गहराई से मेरी आँखों में देखा। आप मेरे ऊपर इतने दयाल थे कि आपने उस एक नज़र से ही मेरी आत्मा को जगा दिया। आपने मुस्कुराते हुए कहा, ''सतगुरु ! इस संसार में आकर सबसे कहता है, ''उठो और जागो।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मुक्ति आँखों द्वारा ही मिलती है। महाराज कृपाल हमेशा कहा करते थे, ''आध्यात्मिकता आँखों से ली जाती है और आँखों से ही दी जाती है।'' सन्तों के मुताबिक आँख ही आँख को देती है। यह गुरु और शिष्य का मामला है, सब कुछ आँखों से दिया जाता है। सन्तमत देने का माध्यम आँखें ही हैं। आप दयालु थे; आपने मुझे आँखों से दिया और इस गरीब आत्मा को जगा दिया।

महाराज कृपाल ने मुझे अपना मिशन जारी रखने की ड्यूटी दी।

एक बार महाराज कृपाल गंगानगर से करणपुर जा रहे थे। मैंने सोचा कि आपको कार में अकेले जाना चाहिए ताकि आप कार की पिछली सीट पर आराम कर सकें। उस समय आपकी तबीयत ठीक नहीं थी, आप बहुत थके हुए थे। उससे पहली रात आपने सतसंग दिया और अपना बहुत समय लोगों से मिलने में लगाया था।

आपने मुझे अपने पास बुलाकर कहा, ''मैं तुमसे बहुत जरूरी बात करना चाहता हूँ।'' मैंने कहा कि महाराज जी ! आप बहुत थके हुए हैं आपको आराम करना चाहिए, मैं अपनी जीप में चला जाऊँगा। आपने

मेरा हाथ पकड़कर अपनी कार में बैठाते हुए मुझसे कहा, ''तुम मेरे साथ बैठो, मुझे तुमसे बहुत जरूरी बातें करनी है।''

उन दो घंटों में आपने मेरे साथ उस समय की बात की जब आपके गुरु ने शरीर छोड़ा, उस समय आपकी क्या हालत हुई। आपने वह परिस्थितियाँ बताई जिनमें महाराज सावन सिंह जी ने आपको काम करने के लिए कहा। महाराज सावन सिंह जी ने आपको 'नामदान' देने का काम सौंपा। आपने बताया कि ऐसे बहुत से आदेश होते हैं जो गुरु अपने शिष्यों को देता है और शिष्य उन आदेशों का पालन करते हैं क्योंकि ये आदेश दुनिया के भले के लिए होते हैं।

आपने फिर कहा कि जब मेरे गुरुदेव ने मुझे 'नामदान' देने का हुक्म दिया तो मैंने उनसे कहा, ''मैं यह काम नहीं कर सकता।'' महाराज सावन सिंह जी ने जोर देकर कहा, ''कृपाल सिंह ! तुम्हें यह काम करना पड़ेगा। ऐसे बहुत से लोग होंगे जो थ्योरी अच्छे ढंग से समझा सकते हैं लेकिन सिर्फ थ्योरी समझाना काफी नहीं क्योंकि थ्योरी ऊपर नहीं ले जा सकती। 'नामदान' देना आत्मा की जिम्मेदारी लेना है। जो सिर्फ थ्योरी समझाते हैं उन्होंने भजन-सिमरन नहीं किया होता, उनके पास सच्चा ज्ञान नहीं होता; वे आत्माओं को गलत रास्ता दिखा देंगे। ऐसे लोगों को ढूँढना बहुत मुश्किल है जिन्होंने खुद भक्ति की हो और जो दूसरों से भक्ति करवा सकें। मैं नहीं चाहता कि मेरी शिक्षा संसार में गुम हो जाए इसलिए मैं यह काम तुम्हें दे रहा हूँ ताकि मेरी शिक्षा जिंदा रहे और लोगों को मिले। तुम्हें यह काम करना होगा।''

मैंने उस समय महाराज सावन सिंह जी के सामने अपना सिर झुकाया और वह सब स्वीकार किया जो उन्होंने कहा था।

जब महाराज सावन सिंह ने महाराज कृपाल को यह ड्यूटी दी तब अपने सेवादारों से 'नामदान' मिले हुए लोगों की गिनती करने के लिए कहा। सेवादारों ने बताया कि लगभग 1,25,000 लोगों को 'नामदान'

मिल चुका है। यह सुनकर महाराज सावन ने कहा, ''कृपाल सिंह ! मैंने तुम्हारा आधा काम कर दिया है बाकी का काम तुम्हें करना है।''

यह सुनकर महाराज कृपाल हैरान हुए। उस समय उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक रही है। आप उस समय अपने गुरु के सामने रोते हुए बोले, ''महाराज जी ! बाकी का आधा काम भी आप ही करें।'' महाराज सावन ने कहा, ''नहीं ! यह काम तो तुम्हें ही करना पड़ेगा।'' महाराज कृपाल ने जवाब दिया, ''आप मुझे पाइप बनने दें ! आप जो पानी मुझे भेजेंगे, मैं वह अपने में से जाने दूँगा। आप जो दया मुझे देंगे, मैं वह दया दुनिया में बाँट दूँगा।''

महाराज कृपाल महाराज सावन सिंह जी के आदेश को टाल नहीं सके। आपने प्रार्थना की, ''महाराज ! आप कृपया यहाँ बैठे रहें, इस संसार में रहें; आप इस सिंहासन पर बैठे हुए बहुत अच्छे लगते हैं।''

आखिरी दिनों में महाराज सावन सिंह जी की सेहत ठीक नहीं थी। संगत ने आपसे प्रार्थना की कि आप अपना इलाज करवाएं और महाराज जयमल सिंह से विनती करें कि संगत की खातिर आपको इस संसार में रहने दिया जाए। महाराज सावन सिंह जी कहते, ''मैं अपने गुरुदेव के आगे यह विनती नहीं कर सकता क्योंकि इससे मेरी गुरुमुखता पर असर पड़ता है।''

महाराज कृपाल हमेशा महाराज सावन के आगे गिड़गिड़ाते हुए विनती करते, ''हम आपका दर्द सहन नहीं कर सकते, आप कृपया हम पर दया करके अपना इलाज करें। आप हमेशा ही शारीरिक तौर पर यहाँ रहें और हम सबका मार्गदर्शन करें। आपकी शारीरिक मौजूदगी की दया हम पर बनी रहे।

एक दिन महाराज सावन सिंह जी ने महाराज कृपाल को अपने पास बुलाकर प्यार से कहा, ''तुम हमेशा मुझे अपना इलाज करवाने और यहाँ रहने के लिए कहते हो। आज सच्चखंड में फैसला होना है;

मेरे पलंग के पास भजन पर बैठकर अपनी आँखों से देखो कि मालिक के दरबार में क्या फैसला हो रहा है?''

महाराज कृपाल ने भजन में देखा कि सच्चखंड में सभी पूर्ण गुरु गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, शम्स तबरेज, मौलाना रूम, तुलसी साहब, स्वामी जी महाराज, पल्टू साहब जो इस नाशवान संसार में आए थे इकट्ठे हुए हैं। सबको एक-दूसरे से बहुत प्यार है, वे अच्छे दोस्तों जैसे हैं। वहाँ इकट्ठे होकर चर्चा कर रहे थे कि महाराज सावन सिंह को कुछ और समय के लिए संसार में छोड़ना चाहिए या नहीं?

सभी गुरु इस बात पर राज़ी थे कि महाराज सावन सिंह जी इस संसार में कुछ और समय रह सकते हैं लेकिन बाबा जयमल सिंह जी सहमत नहीं थे। बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''सावन सिंह ने पहले ही अपने ऊपर बहुत भार लिया हुआ है; इस समय संसार की परिस्थितियाँ साथ नहीं दे रही हैं अब उन पर और भार नहीं डालना चाहिए, उन्हें वापिस बुला लेना चाहिए।''

महाराज कृपाल ने यह सब भजन में देखा और जब आप भजन से उठे तो महाराज सावन ने पूछा, ''अब तुमने देख लिया कि मेरे लिए क्या फैसला लिया गया है?'' महाराज कृपाल एक शब्द भी नहीं बोले और आपने महाराज सावन के आगे अपना शीश झुका दिया।

महाराज कृपाल ने महाराज सावन सिंह जी की प्यार से भरी हुई आँखों में देखा। उनकी आँखों ने आपको बहुत नशा दिया। महाराज कृपाल ने कहा, ''उनकी आँखों से मुझे जो नशा मिला उस नशे को शब्दों में समझाया नहीं जा सकता। उन्होंने प्यार से भरी हुई जो दयालु नजर मुझ पर डाली वह हमेशा मेरे साथ रहती है।'' महाराज सावन ने महाराज कृपाल को अपनी सारी दौलत दे दी। उसके बाद महाराज सावन सिंह जी की आँखें बंद हो गई और अंदर देखने लगी।

महाराज कृपाल को यह काम करने में कोई खुशी दिखाई नहीं दी। जो अभ्यासी अभ्यास करते हैं और अंदर जाते हैं वह यह काम

मिलने पर खुश नहीं होते। वे उस भार से वाकिफ होते हैं जो भार उनके गुरु ने उठाया होता है। उनमें गुरु बनकर यह काम करने का उतावलापन नहीं होता क्योंकि वे जानते हैं कि गुरु बनकर उन्हें अपने कंधों पर कितना भार उठाना पड़ेगा।

जब गुरु शिष्य को यह काम देता है तो शिष्य की आत्मा काँपती है। वह गुरु के चरणों में रोते हुए विनती करता है कि गुरु को शारीरिक तौर पर रहना चाहिए ताकि संगत को उनके दर्शनों का फायदा मिलता रहे। वह हर संभव प्रयास करता है कि गुरु उसे यह काम न दे। गुरु के चोला छोड़ने की खबर भी उसे मौत से कम नहीं लगती। शिष्य चाहता है कि उसका गुरु संसार में हमेशा उसके सिर पर रहे लेकिन जब गुरु उसे इस जिम्मेदारी का आदेश देता है तो वह अपने गुरु को मना नहीं कर सकता और गुरु की मौज को स्वीकार करता है ।

महाराज कृपाल ने मुझे बताया कि मैं यह काम नहीं करना चाहता था, मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी लेकिन मुझे महाराज सावन सिंह जी की आज्ञा का पालन करना पड़ा। उनके मिशन को जारी रखना पड़ा। गुरु जिस शिष्य को 'नामदान' की सेवा के लिए नियुक्त करता है वह गुरु के आदेश के आगे सिर झुकाकर इस जिम्मेदारी को स्वीकार करता है। गुरु की आज्ञा का पालन न करने से बड़ा कोई गुनाह नहीं क्योंकि शिष्य गुरु के प्यार में बंधा होता है।

जो शिष्य गुरु की जगह काम करते हैं वे निंदा, चुगली और पार्टियों में शामिल नहीं होते। संगत में किसी तरह का बिखराव नहीं डालते। वे नम्रता से भरे होते हैं। उनके शरीर के हर रोम से गुरु के लिए प्यार झलकता है।

जो लोग सिमरन नहीं करते, पार्टियाँ बनाते हैं लोगों की निंदा करते हैं वही गुरु बनने के इच्छुक होते हैं। वे नहीं जानते कि उन्हें काल पावर से आत्माओं का हिसाब करना पड़ेगा और आत्माओं के कर्मों को अपने शरीर पर लेना पड़ेगा।

जब महाराज सावन सिंह जी ने यह संसार छोड़ा तब महाराज कृपाल के लिए शारीरिक बिछोड़ा बहुत असहनीय हो गया। डेरा ब्यास में महाराज कृपाल का सुंदर घर बना हुआ था जो मैंने भी देखा है। आपने अपना वह घर भी चुपचाप छोड़ दिया। आपने गुरु की गद्दी या सम्पत्ति के लिए लड़ाई नहीं की। आपने डेरा ब्यास को प्रणाम किया और गुरु की याद में ऋषिकेश के जंगलों में जाकर भक्ति करने लगे। जो प्रेमी महाराज कृपाल को ऋषिकेश से वापिस लेने गए थे वे ही जानते हैं कि महाराज कृपाल को संगत के फायदे के लिए संसार में वापिस लाना कितना मुश्किल था।

जब महाराज कृपाल मुझे यह सब बता रहे थे उस समय मेरा दिल और शरीर काँप रहा था, मुझे लगा जैसे मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक रही हो। मैं सोच रहा था कि आप मुझे यह सब क्यों बता रहे हैं? मैंने आपसे पूछा, ''महाराज जी ! आप किस तरह की बातें कर रहे हैं?'' आपने कहा, ''यह बातें भविष्य में तुम्हारी मदद करेंगी।'' मुझे संकेत मिल गया कि आप मुझसे भी वही कहने जा रहे हैं। आपने अचानक कहा, ''तुम्हें लोगों को सच का संदेश देना पड़ेगा।'' मैं इतना घबरा गया, मेरा मन हुआ कि मैं कार का दरवाजा खोलकर बाहर कूद जाऊँ पर आपने मुझे कसकर पकड़ा हुआ था।

मैंने आपके सामने रोते हुए कहा, ''महाराज ! आप जानते हैं कि मैं इस संसार में किसी को नहीं जानता और मुझे सांसारिक ज्ञान भी नहीं है। आप महान हैं, आपको इतना सांसारिक ज्ञान है फिर भी आपको लोगों के विरोध और निंदा का सामना करना पड़ा तो मैं कहाँ खड़ा होता हूँ? लोग मेरी बुराई करेंगे; मैं यह काम कैसे कर पाऊँगा?''

मेरी आपसे विनती है कि आप सदा हमारे साथ रहें ताकि हम आपकी दया का आनंद ले सकें। आप यहाँ रहकर अपना काम करें, हम आपके साथ बैठकर बहुत खुश होंगे। आपने मुझे गले से लगाया और बोले, ''तुम्हें इन सब बातों की चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि

जब बुरा बुराई नहीं छोड़ता तो अच्छा अच्छाई क्यों छोड़े? तुम्हें यह काम करना होगा।'' आपने यह भी कहा, ''आजकल प्रोपोगंडा और सतसंग अपनी ऊँचाई पर है, पढ़े-लिखे लोग पार्टियों की मदद से गुरु बन जाएंगे। वे झूठ को सच और सच को झूठ बना देंगे; भजन न करने के कारण खुद भी भ्रम में होंगे और दूसरों को भी अज्ञान की खाई में ले जाएंगे। किसी की आत्मा को धोखा देना सबसे बड़ा पाप है।''

आपने जोर देकर कहा, ''सच्चाई का रास्ता चलता रहना चाहिए ताकि उन आत्माओं की जरूरतें पूरी हो सकें जिन्हें परमात्मा की सच्ची चाह है। अब तुम्हें यह काम करना होगा। ध्यान रखना मेरी शिक्षा को इस संसार में तबाह मत होने देना। तुम्हें इस संसार में मेरी शिक्षा को फैलाना और जारी रखना होगा।''

सिर्फ मैं ही जानता हूँ कि उस समय मुझे कैसा महसूस हुआ क्योंकि मैंने गुरु बनने के लिए अभ्यास नहीं किया था। मैं यह काम नहीं करना चाहता था। मैंने 'दो-शब्द' का अभ्यास पक्का कर लिया लिया था। जिसने पहले दो मंडलों का अभ्यास पक्का कर लिया हो उसे यह काम करने की इज़ाज़त नहीं होती क्योंकि वह अभी भी पूर्ण नहीं होता। आपने जब मुझे यह काम करने का आदेश दिया। उस समय मैंने बहुत उदासी महसूस करते हुए आपसे कहा, ''महाराज ! मैंने भजन इसलिए किया था क्योंकि मैं आपके चरणों का भक्त था। आपकी गोद में बैठना चाहता था। मैं आपके प्यार की मधुमक्खी और आपके चरणों का प्रेमी बनना चाहता था। ऐसा करके मुझे खुशी मिलती है।''

आपने मेरे रोने और काँपने की तरफ नहीं देखा, मुझे अपने गले से लगाकर कहा, ''तुम चिंता मत करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। कुछ भी बुरा नहीं होगा। तुम्हारा काम सच्चाई बताना है।'' आपने अपने सीने पर अपना हाथ रखकर कहा, ''मुक्त करना मेरा काम है, जिन आत्माओं को तुम 'नाम' दोगे मैं उन्हें मुक्त करूँगा।''

मैं अपने दिल की गहराई से यह बात कहता हूँ अगर मैं अपने दिल की चाहत गुरु पर थोप सकता तो मुझे 'नामदान' देने का काम नहीं मिला होता, मुझे आपका मिशन चलाने की सेवा नहीं दी गई होती। मैंने गुरु बनने के लिए भक्ति नहीं की थी, मैंने परमात्मा की भक्ति इसलिए की थी क्योंकि मैंने सुना था जिस तरह बच्चा माँ को प्यारा होता है उसी तरह भक्त परमात्मा को प्यारे होते हैं।

मैं सिर्फ परमात्मा के प्यारों में से एक बनना चाहता था। मैंने सोचा था कि मैं जब अभ्यास में खुद को पक्का कर लूँगा तो मैं परमात्मा से मिल लूँगा और सदा परमात्मा से जुड़ा रहूँगा। उसके बाद मुझे शान्ति मिलेगी और मेरी सारी चिन्ताएं और परेशानियाँ खत्म हो जाएंगी।

मैं जब भक्ति कर रहा था तब मुझे इस सेवा का कोई अंदाजा नहीं था। मैं बहुत भोला था। मैंने भूख-प्यास सहकर भक्ति इसलिए नहीं की थी कि गुरु मुझसे यह काम करवाएंगे और मुझसे प्यारों के कर्मों का बोझ उठवाएंगे। मुझे पूरा भरोसा था कि मेरा गुरु पूर्ण है वह मेरी आत्मा को मुक्त करके सच्चखंड जरूर ले जाएगा फिर इस संसार में वापिस आने का कोई सवाल नहीं होगा।

अगर मुझे पता होता कि भक्ति में पक्का होने के बाद मुझे आत्माओं की देखभाल करने की, प्यारों के लिए सतसंग करने की, हवाई जहाजों पर उड़ने की, दिन-रात की परेशानी की, यहाँ-वहाँ जाकर लोगों से मिलने की इतनी बड़ी जिम्मेदारी दे दी जाएगी तो मैं इस तरह अभ्यास नहीं करता।

जब आपने मुझे अपना मिशन जारी रखने का आदेश दिया तो सिर्फ मैं ही जानता हूँ कि मेरे अंदर क्या हुआ? मुझे अपने अंदर एक चोर जैसा महसूस हुआ जो रंगे हाथों पकड़ा जाता है। वह भाग भी नहीं सकता, बैठ भी नहीं सकता; दुविधा में उसे समझ ही नहीं आता कि वह क्या करे? वह सिर्फ फैसला आने का इंतजार करता है।

जब महाराज कृपाल मुझे नामदान देने का हुक्म देते हैं तब मैं उन्हें उनका असली रूप दिखाने के लिए कहता हूँ:

हमारे प्यारे सतगुरु जैसा, हमने न कोई और देखा, (2)
वे तो महान हैं मेरे सतगुरु (2) उनसा महान न और देखा, (1)
हमारे प्यारे.....

वे हैं दोनों जहाँ के मालिक, दुनिया के दिल में बसने वाले,
हर घट के ज्ञाता हैं वे ज्ञानी, दिलों की बातें जानने वाले, (2)
शब्द स्वरूप है रूप उनका (2) रूप जो हमने आँखों से देखा,
हमारे प्यारे.....

देखे तो देखने वाला देखे, देखे तो देखता ही रह जाए,
प्यारी मूरत प्यारी सूरत, देखने वाला उनका हो जाए, (2)
मन मोहक मन को भाने वाला (2) मन भावन हम सबने देखा,
हमारे प्यारे.....

देखा तो शायद हर नजर ने देखा, अपने अपने ख्याल से,
जिसने भी उनको प्यार से देखा, निकला वो इस मझधार से, (2)
वे तो हैं इक महान नाविक (2) भरकर नाव ले जाते देखा,
हमारे प्यारे.....

वह नाविक गुरु कृपाल है प्यारे, सावन प्यारे का प्यारा,
कृपा का सागर कृपाल है प्यारे, अजायब को जान से भी प्यारा, (2)
वे तो अति सुंदर सलोने(2) उनका हुआ जिसने देखा,
हमारे प्यारे.....

जब पहली बार महाराज कृपाल ने मुझे कुछ लोगों को 'नामदान' देने के लिए कहा। आपने मुझे उन लोगों को थ्योरी समझाने और सिमरन सिखाने के लिए कहा। मैंने खड़े होकर अपने दोनों हाथ जोड़कर प्यार से आपसे प्रार्थना की, ''हे प्यारे प्रभु ! आप सच्चे शहन्शाह हैं, आपके घर में किसी चीज़ की कमी नहीं है। आप इन लोगों को अपना खुला दर्शन दें।'' मैं अपने उस अनुभव को कभी नहीं भूल सकता जब आपने मुझे अपना खुला दर्शन दिया था।

उस अनुभव के समय मैंने महाराज कृपाल से पूछा था कि बुल्लेशाह के गुरु इनायत शाह भगवान थे, वह सारी सृष्टि के मालिक थे। बुल्लेशाह को यह पता था फिर भी उन्होंने इनायत शाह को सबसे बड़ा धोखेबाज क्यों कहा?

उस समय सर्दी का मौसम था, रात के आठ या नौं बजे थे। महाराज कृपाल कमरे में रजाई ओढ़कर बैठे थे। आपने अपनी रजाई उतार दी हालांकि उस समय बहुत ठंड थी फिर भी मुझे उनके पूरे शरीर में से गर्माहट आती महसूस हो रही थी। उनका पूरा शरीर रोशनी से भर गया, उनका माथा और आँखें रोशनी बिखेर रही थी। वह रोशनी इतनी तेज थी कि सारा कमरा उस रोशनी से भर गया।

प्यारे गुरु कृपाल ने जवाब दिया कि जब शिष्य अंदर जाता है सच्चाई को और गुरु की हकीकत को देखता है तो उसे अहसास होता है कि गुरु सबसे बड़ा धोखेबाज है। गुरु होता कुछ और है और हमें बताता कुछ और है। हम गुरु को बाहरी तौर पर अपनी तरह साँस लेते, चलते-फिरते, बीमार होते और कर्मों का भुगतान करते हुए देखते हैं जबकि वह यह सब दूसरे लोगों की खातिर करता है।

हम उसे सब कुछ वैसे ही करते हुए देखते हैं जैसे हम खुद करते हैं। वह हमें जैसा दिखता और लगता है वैसा नहीं होता। वह सर्वस्वामी होकर भी हमारे सामने बहुत छोटा और नम्र बन जाता है। वह हमें बताता है कि मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ। तुम्हारा गुरु 'शब्द' है। मैंने तुम्हें 'शब्द' के साथ जोड़ दिया है लेकिन वह खुद ही 'शब्द' है। क्या यह धोखा नहीं? धोखेबाज कहते कुछ हैं उनके दिल में होता कुछ और है। इसी तरह गुरु बाहरी तौर पर हमारे जैसे दिखते हैं लेकिन अंदरूनी तौर पर ऐसे नहीं होते।

रानी इन्द्रमति कबीर साहब की भक्त थी। जब वह शरीर से ऊपर उठकर अंदर के मंडलों में गई तो उसने देखा कि कबीर साहब परमेश्वर के सिंहासन पर बैठे हैं। उसने कबीर साहब के चरणों में झुककर कहा,

''अगर आप मुझे पहले बता देते कि आप ही सारी सृष्टि के मालिक है तो मैं अभ्यास और बाकी परेशानियों से नहीं गुजरती, तभी आपके चरणों में झुक जाती।'' कबीर साहब ने कहा, ''अगर मैं तुम्हें पहले ही बता देता कि मैं सारी सृष्टि का मालिक हूँ तो तुम मुझ पर विश्वास न करती। तुमने जो करना है वह सब अब कर सकती हो।''

जब आप अंदर जाकर गुरु को देख लेते हैं कि वह क्या है? और जब आप बाहर भी उसके महिमामंडित रूप में देख लेते हैं तब आप छोटे और नम्र बन जाते हो। जब आप गुरु की असलियत को देख लेते हैं तो आपको अहसास हो जाता है कि गुरु सबसे बड़ा है। महान है। सारी सृष्टि का मालिक है और उसके शरीर के हर रोम में से रोशनी निकल रही है; तब आपमें से अहंकार और मैं-मेरी खत्म हो जाते हैं।

उस वाक्या को याद करते हुए मैंने आपसे कहा, ''महाराज जी! आप इन्हें अपना खुला दर्शन क्यों नहीं दे देते? अगर आप इन्हें अपना खुला दर्शन दे देंगे तो पंडित और मुल्ला के बीच की सारी लड़ाई खत्म हो जाएगी, हर तरफ शान्ति हो जाएगी। लोगों के माथों पर तिलक लगाने के लिए पंडित जो केसर मिलाते हैं वे इसका इस्तेमाल नहीं करेंगे। मुल्ला, अल्लाह के नाम पर लोगों को जगाना भूल जाएंगे। गुरुद्वारे के भाई भी रुक जाएंगे कि वह क्या कर रहे हैं? हर घर में सिर्फ आपकी ही बात होगी अगर आप पूरे संसार पर अपनी दया नहीं करना चाहते तो कम से कम जो लोग इस समय 'नामदान' लेने के लिए आए हैं इन पर अपनी दया कर दें।''

उस समय महाराज जी बहुत सख्त हो गए। आपने मुझसे कहा, ''इनसे मेरे कपड़े मत फड़वाओ। तुम सिर्फ वह करो जो मैंने तुम्हें करने के लिए कहा है।'' U U U

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम	**: 18 से 20 मई – 2007**
अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम	**: 10 से 12 अगस्त – 2007**